# दिल्ली पब्लिक स्कूल, राँची

## सेल टाउनशिप, राँची

### वार्षिक परीक्षा (2016-17)

कक्षा– एकादष विषय–हिन्दी

समय–3 घंटे पूर्णांक–90

---

**खण्ड – 'क'** **[10+5=15]**

**1.** निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रष्नों के उत्तर दीजिए:–

तत्वेत्ता षिक्षाविदों के अनुसार, विद्या दो प्रकार की होती है। प्रथम वह, जो हमें जीवन यापन के लिए अर्जन करना सिखाती है और द्वितीय वह, जो हमें जीना सिखलाती है। इनमें से एक का भी अभाव जीवन को निरर्थक बना देता है। बिना कमाए जीवन निर्वाह संभव नहीं। कोई भी नहीं चाहेगा कि वह परावलंबी हो, माता–पिता परिवार के किसी सदस्य, जाति या समाज पर। ऐसी विद्या से विहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है, वह दूसरों के लिए भार बन जाता है।

साथ ही, दूसरी विद्या के बिना सार्थक जीवन नहीं जिया जा सकता। बहुत अर्जित कर लेने वाले व्यक्ति का जीवन यदि सुचारू रूप से नहीं चल रहा, यदि उसमें वह जीवन षक्ति नहीं है, जो उसके अपने जीवन को तो सत्पथ पर अग्रसर करती हो साथ ही अपने समाज, जाति, एवं राष्ट्र के लिए मार्गदर्षन करती हो, तो उसका जीवन भी मानवजीवन का अभिधान नहीं पा सकता। वह भारवाही गर्दभ बन जाता है या पूँछ एवं सींगविहीन पषु कहलाता है।

वर्तमान भारत में पहली विद्या का स्पष्टतः अभाव दिखाई देता है, परन्तु दूसरी विद्या का रूप भी विकृत ही है क्योंकि न तो स्कूल कॉलेजों में षिक्षा प्राप्त करके निकला छात्र जीविकोपार्जन के योग्य बन पाता है और न ही वह उन संस्कारों से युक्त हो पाता है जिनसे व्यक्ति 'कु' से 'सु' बनता है सुषिक्षित, सुसभ्य और सुसंस्कृत कहलाने का अधिकारी होता है। वर्तमान षिक्षा के अंतर्गत हम जो विद्या प्राप्त कर रहे हैं,उसकी विषेषताओं को सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता। यह षिक्षा कुछ सीमा तक हमारे दृष्टिकोण को विकसित करती है, हमारी मनीषा को प्रबुद्ध बनाती है और भावनाओं को चेतन करती है, किन्तु कला, षिल्प, प्रौद्योगिकी आदि की षिक्षा नाममात्र की हाने के फलस्वरूप इस देष के स्नातक के लिए जीविकोपार्जन टेढ़ी खीर बन जाता है और बृहस्पति बना युवक नौकरी की तलाष में अर्जियाँ लिखने में ही अपने जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद कर लेता है।

जीवन के सर्वांगिण विकास को ध्यान में रखते हुए यदि षिक्षा के क्रमिक सोपानों पर विचार किया जाए, तो भारतीय विद्यार्थी को सर्वप्रथम इस प्रकार की षिक्षा दी जानी चाहिए, जो क्रमषः आवष्यक हो, उपयोगी हो और हमारे जीवन को परिष्कृत एवं अलंकृत करती हो। ये तीनों सीढ़ियाँ एक के बाद एक आती हैं, इनमें व्यतिक्रम नहीं होना चाहिए। इस क्रम में व्याघात आ जाने से मानव जीवन का चारू प्रासाद खड़ा करना असंभव है। यह भवन की छत बनाकर नींव बनाने के सदृष है। वर्तमान भारत में षिक्षा की अवस्था देखकर ऐसा ही प्रतीत होता है। प्राचीन भारतीय दार्षनिकों ने 'अन्न' से 'आनंद' की ओर बढ़ने को 'विद्या' का सार' कहा था जो सर्वथा समीचीन ही था।

[क] 'वृहस्पति' बना युवक नौकरी की तलाष में................।' **[2]**
गद्यांष में प्रयुक्त 'वृहस्पति' का क्या आषय है?

[ख] मानव की संज्ञा पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? [1]

[ग] व्यक्ति के 'कु' से 'सु' बनने से लेखक का क्या अभिप्राय है? [1]

[घ] वर्तमान षिक्षा पद्धति के हानि एवं लाभ क्या है? [2]

[ङ] षिक्षा के क्रमिक सोपानों को स्पष्ट करें। [1]

[च] मानव जीवन के चारू प्रसाद से क्या आषय है? [1]

[छ] प्रकृति प्रत्यय अलग करें– अधिकारी, दार्षनिक [1]

[ज] समास विग्रह करें– जीविकार्जन , परावलंबी [1]

**2.** निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रष्नों के उत्तर दीजिएः–

नहीं ये मेरे देष की आँखें नहीं हैं..........
पुते गालों के ऊपर
नकली भवों के नीचे
छाया, प्यार के छलावे बिछाती
मुकुर से उठाई हुई
मुस्कान मुस्कुराती
ये आँखें
नहीं, ये मेरे देष की नहीं है..........
तनाव से झुरियाँ पड़ी कोरों की दरार से
षरारे छोड़ती घृणा से सिकुड़ी पुतलियाँ
नहीं, वे मेरे देष की आँखें नहीं हैं..............
वन डालियों के बीच से
चौंकी अनपहचानी
कभी झाँकती हैं वे आँखें, मेरे देष की आँखें,
खेतों के पार
मेड़ के पार
मेड़ की लीक धारे
क्षिति रेखा खोजती
सूनी कभी ताकती हैं
डलिया हाथ से छोड़ा
और उड़ी धूल के बादल के, बीच में से झलमलाते
जाड़ों की अमावस में से
मैले चाँद चेहरे सकुचाते
में टँकी थकी पलकें
उठाई–

और कितने काल–सागरों के पार तैर आई मेरे देष की आँखों ........................ ।

[क] किस प्रकार की आँखों को कवि स्वीकार नहीं करता? [1X5=5]

[ख] कवि अपने देष की आँखों की किन विषेषताओं की चर्चा करता है?

[ग] कविता का केन्द्रीय भाव बताएँ।

[घ] कवि के देष की आँखें कैसी है?

[ङ] काव्यांष की भाषा षैली की विषेषताएँ बताएँ।

## खण्ड – 'ख'

**3.** किसी एक विषय पर निबंध लिखें – [10]

[क] जलाप्लावनः बाढ़ की विभिषिका

[ख] विद्यार्थी और समाज

[ग] सह षिक्षा

[घ] चुनावः प्रजातंत्र की रीढ़

[ङ] भारत की विदेष नीति

**4.** अनियमित जलापूर्ति की षिकायत करते हुए नगर के महापौर को पत्र लिखें। [5]

### अथवा

'नवभारत टाइम्स' के संपादक को 'देष में बढ़ती भ्रूण हत्या' पर चिंता व्यक्त करते हुए पत्र लिखें।

**5.** संक्षिप्त उत्तर दें– [1X5=5]

[क] डेड लाइन क्या है?

[ख] समाचार प्रसारण में 'लाइव' किसे कहते हैं?

[ग] पत्रकारिता के सिद्धांत क्या हैं?

[घ] पेज थ्री पत्रकारिता क्या है?

[ङ] 'बीट' पत्रकार कौन होते हैं?

**6.** फीचर लिखें – बस्तों के बोझ तले मरता बचपन [5]

### अथवा

आलेख लिखें – विष्व खेल स्पर्धा के परिपेक्ष्य में भारतीय खिलाड़ी

**7.** काव्यांष पढ़कर प्रष्नों के उत्तर लिखें

सबसे खतरनाक वह चाँद होता है
जो हर हत्याकांड के बाद
वीरान हुए आंगनों में चढ़ता है
पर आपकी आँखें को मिर्च की तरह नहीं गड़ता है।

[क] चाँद सबसे खतरनाक क्यों है? चाँद का प्रतीकार्थ स्पष्ट करें।

[ख] घर–आंगन के वीरान होने का क्या कारण है?

[ग] 'आपकी आँखों को मिर्च की तरह नहीं गड़ता' आषय स्पष्ट करें।

[घ] कवि आम लोगों से क्या अपेक्षाएँ रखते हैं पाठ के आधार पर बताएँ। [2X4=8]

## अथवा

हे भूख! मत मचल
प्यास, तड़प मत
हे नींद! मत सता
क्रोध ,मचा मत उथल पुथल
हे मोह! पाष अपने ढील
लोभ, मत ललचा
हे मद! मत कर मदहोष
ईर्ष्या, जला मत
ओ चराचर! मत चूक अवसर
आई हूँ संदेष लेकर चन्नमल्लिकार्जुन का।

[क] कवि ने किस किसको संबोधित किया है? पाठ और कवि का नाम लिखें।

[ख] कवि की प्रार्थना का उद्देष्य स्पष्ट करें।

[ग] यहाँ किसके प्रति भक्ति भावना व्यक्त की गई है? उनकी प्राप्ति का उपाय क्या है?

**8.** काव्यांष पढ़कर प्रष्नों के उत्तर लिखें। [2X3=6]

दूध की मथनियाँ बड़े प्यार से बिलौयी
दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी
भगत देखि राजी–हुयी, जगत देखी रोयी
दासि मीरां लाल गिरधर! तारो अब मोहि।

[क] काव्यांष में प्रयुक्त प्रतीकों के अर्थ स्पष्ट करें।

[ख] पंक्तियों के षिल्प–सौंदर्य पर प्रकाष डालें।

[ग] 'तारो अब मोहि' का अभिप्राय स्पष्ट करें।

## अथवा

वह स्वाधीन किसान रहा,
अभिमान भरा आँखों में इसका,
छोड़ उसे मंझधार आज
संसार कगार सदृष सिखका।

[क] पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों को स्पष्ट करो।

[ख] 'स्वाधीन किसान' से कवि का अभिप्राय क्या है?

[ग] पंक्तियों का षिल्प सौंदर्य स्पष्ट करो।

**9.** किन्हीं तीन प्रष्नों के उत्तर लिखें। [3X2=6]

[क] कवि दुष्यंत कुमार गज़ल में 'गुलमोहर' षब्द का प्रयोग किस अर्थ में करते हैं?

[ख] चंपा को 'पढ़ाई' से इतना विरोध क्यों है?

[ग] निर्मला पुतुल ने अपनी कविता में झारखंडियों की किन विषेषताओं का वर्णन किया है?

[घ] भवानीप्रसाद मिश्र के पिता की दिनचर्या और विषेषताएँ बताएँ।

**10.** गद्यांश पढ़कर प्रष्नों के उत्तर लिखें – **[3X2=6]**

हम उन नमक हरामों में नहीं है जो कौड़ियों पर अपना इमान बेचते फिरते हैं। आप इस समय हिरासत में है। आपका कायदे के अनुसार चालान होगा। बस, मुझे अधिक बातों की फुरसत नहीं है।

[क] गद्यांष के आधार पर वक्ता की चारीत्रिक विषेषताओं पर प्रकाष डालें।

[ख] 'कायदा' क्या था? किसके चालान की चर्चा की जा रही है? उसका अपराध क्या था?

[ग] वक्ता कौन है? वह किनको नमकहराम कह रहा है? क्यों?

## अथवा

घनराम की संकोच, असमंजस और धर्मसंकट की स्थिति से उदासीन मोहन संतुष्ट भाव से अपने छल्ले की त्रुटिहीन गोलाई को जाँच रहा था। उसने धनराम की ओर अपनी कारीगरी की स्वीकृति पाने की मुद्रा में देखा। उसकी आँखों में एक सर्जक की चमक थी, जिसमें न स्पर्धा थी और न ही किसी प्रकार की हार जीत का भाव।

[क] लेखक और पाठ का नाम लिखें और घनराम का कथानायक के साथ संबंध बताएँ।

[ख] घनराम के धर्मसंकट की वजह क्या थी और क्यों?

[ग] कथानायक की आँखों में हार जीत भाव क्यों नहीं था?

**11.** किन्हीं तीन प्रष्नों के उत्तर लिखें। **[3X3=9]**

[क] स्पीति की भौगोलिक विषेषताओं का परिचय दें।

[ख] सैयद हैदर रजा की एक उत्कृष्ट चित्रकार बनने की यात्रा में कौन –कौन सहायक और महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व सिद्ध हुए? पाठ के आधार पर बताएँ।

[ग] रजनी पात्र का परिचय पाठ के आधार पर दें।

[घ] 'भारतमाता' पाठ के अनुसार नेहरू जी के व्याख्यानों का मुख्य विषय क्या था? क्यों?

**12.** कुँई और कुँए की भिन्नता को बताते हुए कुँई की निर्माण प्रक्रिया पर प्रकाष डालें। **[5]**

## अथवा

घरेलू नौकरों का जीवन नारकीय और त्रासद होता है। स्पष्ट करें।

**13.** [क] 'आलो आंधारि' पाठ कई सामाजिक समस्याओं को उजागर करता है। कैसे? अपने विचार रखें। **[5]**

[ख] 'राजस्थान की रजत बूँदें' षीर्षक की सार्थकता पाठ के आधार पर सोदाहरण बताएँ। **[5]**